ओरण-देवबणी री बात

कृपाविस का सामुदायिक जंगल देवबणी–ओरण संरक्षण अभियान

अंक 31 मार्च 2024

राजस्थान सरकार ने ओरणों को डीम्ड फॉरेस्ट घोषित करने का नोटिफिकेशन जारी किया

माननीय उच्चतम न्यायालय में याचिका आई.ए.संख्या 41723/2022 (श्री अमन सिंह द्वारा) प्रकरण संख्या 202/1995 में ओरण एवं पारिस्थितिकी क्षेत्रो में डीम्ड फॉरेस्ट घोषित किये जाने के निर्देशों के क्रम में राजस्थान सरकार (वन विभाग) द्वारा राजस्थान के विभिन्न जिलों के ओरणों को डीम्ड फॉरेस्ट घोषित करने का नोटिफिकेशन जारी किया है। उपरोक्त प्रकरण अभी भी माननीय न्यायलय में विचाराधीन है।

वन विभाग के अनुसार ओरण को डीम्ड फॉरेस्ट घोषित करने का उद्देश्य पेडों व पशु–पक्षियों को बचाना है। वर्तमान मे जो उपयोग ओरण भूमि का हो रहा है वो पहले की तरह जारी रहेगा लेकिन डीम्ड फॉरेस्ट मे घोषित होने के बाद न भूमि पर खनन कर पाएंगे और न ही किसी तरह का पक्का निर्माण करवा पांएगें। चिन्हित भूमि में अब पक्की सडक या रास्ता बनाने के लिए फॉरेस्ट कंजर्वेशन एक्ट के तहत अनुमति लेनी होगी। सरकार (वन विभाग) की वेबसाइट पर ताजा आंकड़ों के अनुसार ओरणों का लगभग 4 लाख क्षेत्र डीम्ड फॉरेस्ट में दर्ज किया है। ओरणों के डीम्ड फॉरेस्ट घोषित होने सम्बन्धित कुछ और पहलू यहॉ प्रस्तुत हैं।

1. डीम्ड वन भारतीय वन अधिनियम 1927 के तहत अधिसूचित नही किया जाता हैं और इसलिए इन्हें वन विभाग के नियंत्रण मे नही माना जाता है जैसा कि रिर्जव फॉरेस्ट इत्यादि के मामले मे है।

2. डीम्ड वन वन्यजीव संरक्षण अधिनियम 1972 के तहत अधिसूचित नही है। इसलिए राष्ट्रीय उद्यान या वन्यजीव अभ्यारण में पालन किए जाने वाले प्रतिबन्ध लागू नही होते हैं।

3. चराई, पूजा और चारा संग्रहण जैसे सामुदायिक अधिकार डीम्ड वनो में प्रभावित नही होते हैं।

संक्षेप में डीम्ड वन किसी भी आरक्षित वन या वन्यजीव अभ्यारण या राष्ट्रीय उद्यान के समान नही है जो अलग कानून के तहत् अधिसूचित है। डीम्ड वन केवल वन जैसें क्षेत्र का एक रिकार्ड है और यह भारतीय वन अधिनियम 1927 या वन्यजीव संरक्षण अधिनियम 1972 के तहत् अधिसूचित नही होने की वजह से वो तमाम प्रतिबन्धों से भिन्न है। यदि ओरण को डीम्ड वन की मान्यता दी जाती है तो यह वास्तव में ऐसे समुदाय–संरक्षित वनो को सुरक्षा प्रदान करेगा एवं भविष्य में ऐसी भूमि के उच्च पावर बिजली लाईनो, खनन, औधोगिक और वाणिज्यिक उपयोग जैसी किसी भी हानिकारक गतिविधियों से संरक्षित रखेगा।

आशा है कि लोगो द्वारा व्यक्त की गयी चिन्ताओं को राज्य सरकार स्पष्ट करते हुए समुदाओ को आश्वत करेगी कि डीम्ड फोरेस्ट घोषित होने पर उन पारस्परिक संरक्षित क्षेत्रो पर उनके अधिकार प्रभावित नही होगे।

KRAPAVIS

कृषि एवं पारिस्थितिकी विकास संस्थान (कृपाविस)
कृपाविस ओरण प्रशिक्षण केन्द्र, पुराना भूरासिद्ध
काला कुँआ, जिला अलवर-301001 (राज.)
ई-मेल:krapavis_oran@rediffmail.com
सम्पादन : अमन सिंह व प्रतिभा सिसोदिया

ग्रामीण आजीविका सुरक्षा में ओरणों का महत्व

पश्चिमी राजस्थान की विषम परिस्थितियों के मद्देनजर ओरण ग्रामीण समुदाय के लिए जीवन रेखा के सदृश्य हैं। यहां की पशुपालन आधारित अर्थव्यवस्था में प्राकृतिक चरागाहों, गोचर तथा ओरण भूमि का अतुलनीय योगदान रहा है। विशेषकर सूखा व अकाल के समय ओरणों की महत्वत्ता से हम भली भांति परिचित हैं। इसके साथ ही स्थानीय जन भी अपने दैनिक जीवन की कुछ न कुछ आवश्यकताओं की आपूर्ति ओरणों से करते हैं। प्रस्तुत आलेख में ग्रामीण आजीविका में ओरणों का क्या महत्व है, इसके विषय में बताया गया है।

परम्परागत जल संसाधन : प्राय : तालाब, बावड़ी, कुंड, बेरी आदि संरचनाओं का मिलना पश्चिमी राजस्थान के ओरणों की एक खास विशेषता रही है। आज भी ये पीने के पानी के स्रोत आधार हैं। वर्तमान में तो ये जल संरचनाए आज भी कारगर यानि ठीक अवस्था में हैं। लेकिन कुछ स्थानो पर या तो ये बहुत ही क्षरित अवस्था में हैं या केवल इन संरचनाओं के अवशेष मात्र रह गये हैं। हमारा प्रयास होना चाहिए कि जो संरचनाएं क्षरित अवस्था में हैं उन का जीर्णोद्धार करें तथा जो केवल चिन्ह के रूप में रह गये हैं उनको फिर से बनाया जाये। कृपाविस संस्था का इस ओर विशेष रूप से ध्यान केंद्रित है तथा विगत वर्षों में जैसलमेर जिले के कुछ ओरणो में इस तरह के कार्य को पूर्त रूप दिया गया है। इस सामाजिक कार्य में सभी के योगदान की अपेक्षा है, जिससे इन परम्परागत जल संसाधनो का स्थानीय विरासत में समुचित स्थान मिल सके।

हम बहुत अच्छी प्रकार से जानते हैं कि हमारे जो ओरण हैं वे समृद्ध पशुधन आधारित अर्थव्यवस्था और पशुपालन समुदायों के विकास को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते आये हैं। ये शुष्क मौसम में चारे के महत्वपूर्ण भंडार हैं तथा पशुधन के लिए महत्वपूर्ण चराई के संसाधन हैं। साथ ही जो ओरण हैं वह आर्थिक रूप से कमजोर वर्गो यानी पशुधन पर निर्भर ग्रामीण समुदायों की आजीविका सुरक्षा के लिए एक सामाजिक तंत्र के रूप में विकसित हुई, जो आजीविका उद्देश्यों के लिए प्राकृतिक संसाधनो पर उनके अधिकार को सुरक्षा प्रदान करती है।

हमें ओरणों से खाद्य आहार के रूप में वर्ष पर्यन्त कुछ न कुछ मिलता रहता है। बोरडी के पके फलो को तोड़कर खाते तो हैं ही और भविष्य के लिए एकत्र भी करते हैं। खेजड़ी से सांगरी तथा इसके पकी फलियां जिन्हे खोखा कहते है बच्चे चाव से खाते हैं। कैर के कच्चे फल भी ओरण क्षेत्र के सब्जी व अचार के लिए उपयोग में लेते है तो इसके पके फल जिसे धालू कहते हैं उनको ताजा खाते हैं। खींप की तरूण फलियां जिन्हे खिपोली कहते हैं उनकी स्वादिष्ट सब्जी बनाते हैं। इसी तरह कुमट के बीज एकत्र करते हैं जो कि पंचकुटा व्यंजन का एक घटक है। मीठा जाल जिसके फलो को पीलू कहते हैं उन्हे चाव से खाते हैं जो शीतल प्रकृति के होते हैं। जिन ओरणो में लाणा झाड़ी प्रचुर मात्रा में है, वहां उसके बीज इकट्ठा करते है तथा बाजरे के साथ मिलाकर रोटी बनाते हैं। जिसको पौष्टिक माना जाता है। साथ ही वर्षाकाल के दौरान लाणा की झाड़ियों के नीचे जो खुम्बी मिलती है उसको एकत्र करते हैं तथा सब्जी बनाते हैं। अधिक होने पर ग्रामवासी बेचते भी हैं जो अतिरिक्त आय का साधन है। तुम्बा के बीजो का भी खाने में उपयोग करते हैं। ओरण में मिलने वाले और भी अनेक ऐसे पादप हैं, जिनको किसी न किसी रूप में खाने में उपयोग करते हैं।

जैसा कि हम जानते हैं कि ओरण दुर्लभ व लुप्त प्राय औषधीय पौधों हेतु शरणीय स्थल है। ओरणों में पाए जाने वाले अनेक पेड़–पौधें हैं जिनका औषधीय महत्व हैं। स्थानिय समुदाय द्वारा इन पौधों को विभिन्न बीमारियों के निदान हेतु उपयोग में लिया जाता है। पश्चिमी राजस्थान में गुग्गल एक महत्वपूर्ण औषधीय पादप है, इसके साथ ही तुम्बा, आक, चमकस, बियानी, चिनावर, रींगनी, दूध्धी, जवासा, संतरी या शखंपुष्पी, गोखरू, थोर, मुराल, अरनी, खींप आदि बहुत से पादप प्रजातिया है जिनको परम्परागत रूप से उपयोग करते हैं। पशुओ के विभिन्न रोगो से भी स्थानीय जन इन पादपो का उपयोग करते हैं। हमारी आने वाली पीढ़ी को भी इसका संज्ञान रहे, इसलिए इन पादपों का अभिलेख करना बहुत ही आवश्यक है।

– डॉ. जे. पी. सिंह
सेवानिवृत प्रधान वैज्ञानिक

ओरणों द्वारा प्रदान की जाने वाली पारिस्थितिकी सेवाएँ

जलावन लकडी : खाना बनाने व अन्य कार्यो के लिए हमारे ओरण जलावन लकड़ी का महत्वपूर्ण संसाधन हैं। प्राय: ओरणों से स्थानीय जन सूखी लकड़ियां ही एकत्र करते हैं। पश्चिमी राजस्थान में ईंधन लकडी के लिए फोग, लाणा, खेजड़ी, सीनया आदि की लकड़ियों का अधिक उपयोग करते थे। लेकिन कालांतर में अधिक कटाई व इनको जड़ से निकालने के कारण फोग जैसी प्रजाति अपने प्राकृतिक आवासीय क्षेत्रों में बहुत कम हो गयी है। जहां लाणा प्रजाति आज भी जिन ओरणों में है, उनके आसपास के गावों में आज भी लाणा की सूखी लकड़ियों का ढ़ेर देखने को मिल जायेगा। अत: हमें ओरणों से ईंधन हेतु विवेकपूर्ण तरीके से उपभोग करना चाहिए।

गोंद : पश्चिमी राजस्थान में ओरणों में पाये जाने वाला कुमट वृक्ष ही मुख्यत: गोंद प्राप्त करने का स्रोत है। बु–बावंली झाड़ी से भी अच्छी गुणवत्ता का गोंद एकत्र करते हैं। बबूल वंश की दूसरी प्रजातियों जैसे देसी बबूल से भी गोंद मिलता है। इसके साथ ही जो गुग्गल झाड़ी है उससे गोंद (रेजिन) एकत्र करते हैं। एकत्रित गोंद को स्थानीय जन अपने उपयोग मे लेते हैं तथा अतिरिक्त होने पर बेचते भी हैं।

शहद : ओरणों से मिलने वाला शहद भी एक उत्पाद है जो कि स्थानीय जनों की आजीविका में सहायक है। अत: ओरण में हमारा प्रयास होना चाहिए कि उन प्रजातियों की रक्षा करें जो मधुमक्खी के छत्ते के लिए स्थान प्रदान करती हैं और उन प्रजातियों को जिनसे मधुमक्खियां अपना आहार लेती हैं, तथा शहद की उपलब्धता को बढ़ाती है।

रैशें : ओरण में बहुत से ऐसे पेड़–पौधे है जैसे कि खींप, सीनया या चुग, आक आदि जिनसे ग्रामवासी रेशे निकालते हैं तथा मुख्यत: उनका उपयोग रस्सी बनाने मे करते हैं। इसके साथ ही बुई व आक के फलों के रेशों का उपयोग तकिये आदि भरने में करते हैं।

झौपड़ी निर्माण सामग्री: झौपड़ी निर्माण सामग्री भी ओरण से प्राप्त होने वाला एक संसाधन है जिनमें प्रमुखता से खींप, फोग, सीनया या चुग, आक आदि प्रजातियों की अहम भूमिका है। इसमें खींप का बहुतायात से उपयोग रहा है।

हम कह सकते है कि ग्रामीण आजीविका सुरक्षा मे ओरणों का कितना अधिक महत्व है। उपरोक्त वर्णित लाभो में और भी पहलू हैं जिन के लिए ओरणों पर हमारी निर्भरता है। जैसे कि ओरणों के नजदीक गांवो मे प्राय: शमशान में मृत शरीर के दाह–संस्कार के लिए सूखी लकड़ियों का प्रबंध भी ओरण संसाधन से ही करते हैं। अत: यदि हम चाहते है कि ये संसाधन सतत रूप से आजीविका के लिए उपलब्ध रहें, इसके लिए ओरणों के समुचित प्रबंधन की आवश्यकता के साथ ही हमारी कार्य शैली भी पर्यावरण हितैशी हो, तभी हम इस सांस्कृतिक विरासत को भावीपीढ़ी के लिए संरक्षित रख सकते हैं।

निम्नलिखित कविता में ओरणों के लाभों का सम्पूर्ण विवरण प्रस्तुत है।

श्री तनोटिया ओरण म्हारे गाँव री शान।
सगला भांया ओरण रो थें राखो मान।।
इण ओरण में तीतर अर मीठा बोले मोर।
खेजडिया मान बोरडीया रा मिठा लागे बोर।।
इण ओरण में भेड बकरी अर चारो चरे ढोर।
कौआ कोचरी हिरण, कुरंजा बोले जोर।।
इण ओरण में कैर अर लौणा, खुम्भीयों रो है जोर।
आसे पासे पीलू पाका, मोटा थलीयो (धोरो) शेरो है जोर।।
धकडो बेकर सिनाडी अर चन्दलियो चोखी धार!
हाथ जोउ ने अर्ज करू भायो ओरण रो करो विस्तार।।

– जगमाल सिंह दिधु

वर्तमान परिदृश्य में ओरणों को खतरे : एक विवेचन

ओरण हमारी जीती–जागती सांस्कृतिक धरोहर हैं जो कि सदियों से आध्यात्मिक एवं धार्मिक भावना के महत्व से संरक्षित रही है। यह हमारे पूर्वजों के पर्यावरण संबन्धी दीर्घकालीन अनुभवों की दूरदर्शिता का ही परिणाम है। ऐसा माना जाता है कि इस अतिमहत्वपूर्ण गतिविधि को विशेष–विस्तार के साथ प्रासंगिकता मिली। जिसमें बडे स्तर पर वनो की कटाई हो रही थी जिससे जैवविविधता व जलागम प्रभावित हुए। लेकिन आधुनिकरण के दौर में ये पावन वन खण्ड अर्थात जोकि समृद्ध जैवविविधता का भण्डार गृह हैं, आज खतरे का सामना कर रहे हैं। आधुनिकरण एवं शिक्षा के प्रभाव के साथ ही स्थानीय समुदायों में परम्परागत मूल्य प्रणाली में दिन–प्रतिदिन कमी आने से इनके संरक्षण पर असर पड़ा है। वर्तमान में ओरण अतिक्रमण, खनन, उत्खनन, अत्यधिक/अनियंत्रित चराई, विदेशी प्रजातियों का फैलाव, ओरणभूमि का राजस्व रिकार्ड मे दर्ज न होना आदि विभिन्न खतरों का सामना कर रहे हैं।

अतिक्रमण : वर्तमान परिदृश्य में ओरण भूमि पर अतिक्रमण एक विराट समस्या का रूप ले रही है। अतिक्रमण के अनेक कारण हैं, जिनमें गृहनिर्माण से लेकर खेती के लिए ओरण भूमि पर कब्जा किया जा रहा है। कुछ स्थानो पर इस तरह के भी संकेत मिले हैं कि कृषि कार्य हेतु पास की ओरण भूमि मे पानी के लिए बोरिंग करा रहे हैं। इसके साथ ही और दूसरे कारण भी हैं–

अत्यधिक एवं अनियंत्रित चराई : ओरणों में अनियंत्रित चराई से भी अपरिर्वनीय क्षति हुई है। ओरणों की चराई भूमि में जो बहुवर्षीय चारा घासें जैसे सेवण, धामण, माडा धामण, करड आदि पौष्टिक घासें थी, वे अत्यधिक चराई दबाव के कारण या तो एकदम खत्म हो गयी हैं या खतरे के कगार पर हैं। इसके साथ ही नये उगे पौधों का पशु चराई में कुचलने से खत्म होना, मृदा का संघनन एवं अपरदन दूसरी समस्याएं हैं जिससे ओरणों की जैवविविधता पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। साथ ही दूसरे भौतिक प्रभाव जैसे कि प्रकाश की तीव्रता, वायु एवं तापक्रम परिवर्तन शीलता और मृदा नमी व आर्द्रता का कम होना भी जुड़ जाते है। इसके साथ ही वैश्विक जलवायु परिवर्तन के कारण यह स्थिती और भी गंभीर हो रही है। समय रहते हमें इस विषय पर सोच–विचार करना है कि पशुचराई को किस प्रकार नियंत्रित करे जिससे चराई भूमि की उत्पादकता बनी रहे।

परम्परागत सांस्कृतिक मूल्यों का क्षरण: हम भली–भांति जानते है कि ओरणों के संरक्षण में सामाजिक आस्थाएं एवं वर्जनाएं एक रचनात्मक साधन रहे हैं। वर्तमान परिदृश्य में यह एक गम्भीर चिंता का विषय है कि स्थानिय समुदायों में परम्परागत एवं सांस्कृतिक मूल्यों का क्षरण हो रहा है, जिसने ओरणों के संरक्षण एवं संवर्धन को अहितकर रूप से प्रभावित किया है। एक दूसरा महत्वपूर्ण बिंदु यह भी है कि भौतिक संसाधन प्रबंधन के जो परम्परागत तरीके रहे हैं वह वर्तमान परिप्रेक्ष्य में बढ़ती मानव जनसंख्या और सीमित भौतिक संसाधन के मद्देनजर आज ये कारगर नही हो पा रहे हैं। इस पर गहन चिंतन की आवश्यकता है कि ओरण से जुड़ी जो हमारे आस्थाएं हैं उन को किस तरह से फिर से जीवित किया जाय।

ओरणों में आक्रमक प्रजातियों का प्रसार : विलायती बबूल जैसे विदेशी प्रजातियो के आने से ओरणो में स्वदेशी प्रजातियां खतरे में पड़ गई हैं। कुछ ओरणों में तो चराई भूमि के साथ ही जो पारंपरिक जल संरचानाएं हैं उनको भी विलायती बबूल ने अपनी गिरफ्त में ले लिया है। चराई भूमि में इनके फैलाव से चारा घासें व स्थानीय झाड़ियां खत्म हो रही हैं। इसके साथ ही भेड़–बकरियां इसकी फली खाती है तो पूरे ओरण भूमि में बीज वितरित हो जाते हैं। दूसरा पश्चिमी राजस्थान में वृक्षारोपण कार्य में इजराली बबूल प्रजाति का रोपण किया गया जिससे आसपास की ओरण भूमि में बीज आ गये और अनुकूल स्थिति में उनसे पौधों से पेड़ बन जाते है। ये आक्रामक तो है ही इन की जीवितता बहुत अधिक होने के कारण कम समय में ही अपना फैलाव कर लेती हैं। अत: यह हमारी सभी की जिम्मेदारी है कि विलायती बबूल जैसे प्रजाति का ओरण भूमि से उन्मूलन में सहयोग करें, उसे पनपने न दें। इसके लिए सभी को प्रयासरत रहने की आवश्यकता को बल देना होगा।

नेडान ओरण

नेडान गॉव का ओरण माता आईनाथ जी के नाम से जाना जाता है नेडान ग्राम पोकरण तहसील से पश्चिम दिशा में 57 किलोमीटर दूर है नेडान ग्राम के दक्षिण से नदी निकलती है उसके किनारे व नदी के पास आठ कुऐं व एक पगबावडी थी यानी नौ पानी के नैवाण थें। इसलिए ग्राम का नाम नेडान हुआ जिसमें से दो कुए अभी भी चालू हालात् में है। मरम्मत् की आवश्यकता है बाकी 6 कुॅए व एक पगबावडी लुप्त है। आईनाथ जी माता भाटी वंश की कुल देवी है।

नेडान गॉव जैसलमेर के राजा दुर्जनसाल जी दादोजी कें छोटे भाई वीरबल तिलौकसिंह जी जसहडोत ने बसाया था। नेडान गॉव लगभग चौदहवी शताब्दी में बसाया गया था। राजा दुर्जनसाल दूदाजी व बीरबल तिलोक सिंह के दो दोहा प्रस्तुत कर रहा हूॅ।

सांदू हुंफा सेवियों साहब दुरजन सत्ल
बिडन्दा माथो बोलियो गीता दूहॉ गल्ल
बेरी में बदला लेने जों हंस हंस शीश चढाते
शीश करे घड सें अलबेले बढबढ दांव लगातें मरकर जीत जातें

अमीनो द्वारा ओरण को दर्जकर चारागाह दर्ज किया गया। इस ओरण भूमि में गॉव वाले चाहे किसी भी समुदाय के है हरी लकडी नही काटतें है सूखी लकडी भी सिर्फ जलानें के काम लेंते हैं। नेडान ओरण में सबसे ज्यादा पेड़ बोरडियो के है बाकि खेजडियो, जालो, कुम्मट, केर, फोग, अरणा, गोगाणी ये लुप्त होते जा रहे हैं।

घास – सेवन, धामन, मुर्ट, भुर्ट, गरन्डिया, बेंकर, धकरा, कांन्दी लोफ, बुई, खींप, सीणिया, चग, ग्रामणा लुप्त होता जा रहा हैं हमारे गॉव में गाय, ऊॅट, ऊटनिया, बकरियों, भेंडो, घोडियो, गधा, आदि पालतु पशु बहुत मात्रा में रखतें हैं। उनका पालन–पोषण मात्र ओरण ही है वह हमको दुध, दही, घी, मक्खन, छाछ की पूर्ति करती है व नकदी में जैसे बैल ऊॅट, बकरे, घोड़ा, गधा बिकता है, जो हमारी आवश्यकताओं की पुर्ति करता है। हमको सब्जियॉ मिलती है जैसे सांगरी, केर, हीलारिया, बेर, गांगी, खुम्भी, मशरूम, पिलू, ढाल, खीरडो मवेशियों से खाद मिलता है जो कृषि में उपयोग होता है।

देवस्थान – आईनाथ जी का मंदिर पुराना है सती माता का स्थान है पाबूं जी महाराज का मन्दिर श्री हनुमान का स्थान जुझार गेनसिंह जी का स्थान नाहरी नाडी पर है। भोमियां व जुझार पहाड सिब्ब सवाईसिंह जी का स्थान नेडान में है। देवल मॉ का स्थान है शिवजी कृष्ण भगवान का मन्दिर है जिवित समाधि बाबा बखत नाथ की नागेणचिया माता का मन्दिर गांव सें 2 किलोमीटर दूर पश्चिम दिशा ओरण में है।

पक्षी – नेडान ओरण मे गोडावन, तिलोर, गटा, बाटबड, काला दोडा, सफेद दोडा, गंगू, गिरज आदि पक्षी रहतें है। लेकिन इसमे से गोडावन, तिलोर, गटे, गिरज, काला दोंडा लुप्त होते जा रहें है। लुप्त होने का कारण – विद्युत लाईनें, पवन चक्कियो ओरण का सिमित होना, आस–पास में सोलर प्लान्ट लगाना आदि। विदेशी पक्षी सर्दी के समय आतें है गर्मी शुरू होते ही वापिस चले जातें हैं। जंगली जानवर – हिरण, खरगोश, लोमडी, जंगली सुअर, नील गाय, गोह, गोईडा, नेवला, गिरगिट, सियाल, भेडिया आदि इसमे से हिरण, खरगोश, सियाल, भेडियां घट रहें है ओरण का पानी जिन खेतो में आता है उन खेतो की फसल अच्छी होती है।

ओरण मे तालाब खुदवाना व खेली बनवाना उचित रहता है। नदी में ऐनिकट बांध से जल स्तर बढ़ता है। स्थानिय पौधे लगवाना चाहिए जैसे खेजडी, बोरडी, केर, जाल, ओरणो को खतरो से बचाने हेतु– ओरणो के चारो तरफ बड़े बड़े पेड़ो के रंगीन कलर ओरणो की समिति का गठन विद्युत लाईने व पवन चक्खिया नही लगवाने देनी चाहिए। कृषि एवं पारिस्थितिकी विकास संस्थान (कृपाविस) द्वारा आयोजित ओरण समुदायों में ओरण प्रशिक्षण में 26 सितम्बर 2023 को भाग लेने का अलवर में मेरे को अवसर मिला

– चन्दनसिंह पूर्व सरपंच
ग्राम पंचायत नेडान

आईमाता ओरण कैरालिया

आईनाथ माता ओरण उपखण्ड मुख्यालय पोखरण से 70 कि.मी. एवं जैसलमेर जिला मुख्यालय से 70 कि.मी. दूर कैरालिया गांव में स्थित है। इसका इतिहास लगभग 150 वर्ष पुराना है ओर इसका क्षेत्रफल 450.24 हेक्टेयर है। गाँव की जनसंख्या लगभग 1655 है। स्थानीय समुदायों की आय का प्राथमिक स्रोत कृषि और पशुपालन हैं। यहां ओरण मे कई तालाब है जिनका कृपाविस संस्था द्वारा पुनरूत्थान किया गया है। ओरण में भूजल स्तर लगभग 90 मीटर गहरा है। ओरण के भीतर, आईनाथ माता का मंदिर और चबूतरे हैं जो भोमियाजी को समर्पित है। चैत्र और आश्विन के महीनों में प्रथमा से नवमी तक नवरात्रि उत्सव के दौरान एक मेला (मेला) मनाया जाता है। नवरात्रि उत्सव के दौरान लगभग 500 भक्त इकट्ठा होते हैं, और प्रतिदिन 25 लोग ओरण आते हैं। राजस्व रिकार्ड के अनुसार भूमि ओरण की श्रेणी में आती है।

ओरण गांव के विविध पशुधन का पालन करने में महत्वपूर्ण निभाता है, जिसमें लगभग 2,000 गाय, 2000 बकरियां, 12,000 भेड़, 500 ऊंट, साथ ही कुछ गधे और घोड़े शामिल हैं। ओरण विभिन्न वन्यजीव प्रजातियों का घर है, जैसे जंगली जानवर, पशुओ, पक्षी मे बहुत सारे जानवर पाये जाते है। हिरण, खरगोश, सूअर, नीलगाय, जंगली सूअर हैं। पक्षियो में तीतर, बटेर, बरबर, परबेडी, तीलार, मोर, कबुतर, कौआ, उल्लू, कोतरी आदि है।

सूअरों कि संख्या धीरे–धीरे विलुप्त होने के कंगार पर है। ओरण में एक खुझी मशरूम होती है जो ओरण भुमि में ठासा के पास मे गर्मी एवं वर्षा मे होती है। जो आर्युवेदिक दवाई बनाने के काम आती है इसकी मांग विलायती शहरों मे ज्यादा होती हैं जो हड्डी भी ठीक हो जाती हैं। इसके साथ अन्य पादमों सें औषधिया तैयार होती हैं। उपरोक्तानुसार ओरण मे पशु–पक्षियो, जीव जन्तु के साथ साथ इनका खाना, चारा, पानी व पक्षियां का पालन पोषण, छाया, आवास आदि को आश्रय मिलता है। ओरण से गाँव के लोगो को बेर, केर, सागर, खारेवा, गोंद, गहर, खुम्भी, हल्मरियां, सुखी सब्जीयां मिलती है।

आईनाथ माता ओरण विविध वृक्षों और झाड़ियों की प्रजातियों से समृद्ध हैं, उसके साथ ही ओरण में बोरडी, खेजडी, केर, कुबट, कीकर, बबूल, जाल , बोरडी के पेड़ हैं। ओरण भूमि मे ज्यादा पेड़ो की संख्या हैं। गुगल, गोगाणी और घास में सेवन धामन, मुर्ट–भुर्ट, गरन्डीयां, बेकर, आकडा, कारी, लोफ, बुई, खींप, सीणिया, चग, ठासा जिसमें सें अब विलुप्त होती जा रही है। सेवन घास अब ओरण के भीतर मौजूद नहीं है।

ओरण का प्रबंधन और रखरखाव जगदंबा ओरण समिति कैरालिया द्वारा किया जाता है, जो इसके संरक्षण और सुरक्षा के लिए समर्पित है। समुदाय सख्त नियमों का पालन करता है, और किसी को भी ओराण के भीतर पेड़ काटने की अनुमति नहीं है। समुदाय ओरण के भीतर धार्मिक, सांस्कृतिक और सामाजिक गतिविधियों के लिए एक केंद्र के रूप में कार्य करता है। ग्रामीण साल भर अपने जानवरों को चराने और औषधीय जड़ी–बूटियॉ, फल और गैर–लकड़ी वन उत्पाद निकालने के लिए ओरण का उपयोग करते हैं। इसके अतिरिक्त, ओरण आवश्यक पारिस्थितिकी तंत्र सेवाएं प्रदान करता है, जिसमें परागण, स्वच्छ हवा शामिल है। इस ओरण का अपने आप में बहुत ही ऐतिहासिक एवं धार्मिक महत्व हैं।

ओरण भूमि को बचाना व अतिक्रमण को रोकना होगा और युवाओ को भी हमारे धार्मिक एवं ऐतिहासिक सांस्कृतिक को बनाए रखना होगा। सभी गांव वासियों को मिलकर के सुधार करना होगा। ओरण संरक्षण के नियम बनाने होंगे और युवाओं को आगे आकर के जो पेड–पौधे की कटाई होती है उसे रोकना होगा। ओरण भूमि पर अतिक्रमण ज्यादा किया जा रहा है इसी कारण पेड़–पौधे में कमी आ रही है। अब पशु वन्य जीव के संख्या मे कमी आ रही है। कृषि एवं पारिस्थितिक विकास संस्थान के ओरण समुदायों का संरक्षण एवं ओरण भूमि प्रशिक्षण कार्यक्रम में हमे भी प्रशिक्षित होने का अवसर मिला हम कृपाविस संस्थान का तहदिल से धन्यवाद देते हैं।

– प्रयाग सिंह व प्रेमसिंह कैरालिया

जैवविविधता संरक्षण पर सामुदायिक संदर्भ व्यक्तियो की प्रशिक्षण कार्यशाला

कृषि एवं पारिस्थितिकी विकास संस्थान (कृपाविस) द्वारा दिनांक 24 फरवरी से 26 फरवरी, 2024 तक 3 दिवसीय प्रशिक्षण ओरण प्रशिक्षण केंद्र भूरासिद्ध अलवर पर विभिन्न गांव से आए महिलाओं एवं पुरूषों ने वन पशुधन कृषि अर्तसंम्बध को मजबूत बनाने हेतु जैवविविधता संरक्षण और समुदायों की आजीविका सवर्द्धन पर कार्यशाला में प्रशिक्षण प्राप्त किया। इस कार्यशाला में सरिस्का बाघ परियोजना से सटे विभिन्न गांवो से लगभग 50 स्वम सहायता समुह के सदस्यो ने भाग लिया। कृपाविस संस्थापक श्री अमन सिंह जी द्वारा जैवविविधता संरक्षण और समुदायो की आजीविका संवर्धन पर विस्तृत जानकारी दी गई। उन्होने कहा कि सुप्रीम कोर्ट द्वारा 10 जनवरी 2024 के आदेश की अनुपालना करते हुए सरकार ने लगभग 5000 ओरणों को डीम्ड फोरेस्ट घोषित किया है। जो ओरणों की जैवविविधता को एक अतिरिक्त संरक्षण देने का कार्य करेगा।

कृपाविस के श्री धर्मेन्द्र कुमार भारद्वाज द्वारा जैविक खेती का महत्व ओर देशी खाद, वर्मीकम्पोट बनाने की विधि की जानकारी दी तथा सम्भागियो द्वारा प्रश्नोत्तर का समाधान किया गया तथा देशी बीज संग्रहण, महत्व और सावधानियाँ बरतने की जानकारी दी। प्रशिक्षण में संभागियो को प्याज की खेती की सस्य क्रियाओं एवं कीट व्याधियों की जानकारी दी, फंफूद जनित (जलेबी रोग) के प्रकोप से बचने हेतु ट्राईकोड्रामा मित्र, फंफूद और आद्र गोबर से रामबान औषधि तैयार करने की विधि व उपयोगिता के बारे में व्यावहारिक प्रशिक्षण दिया गया। नीम का तेल बनाने की विधि प्रयोग और महत्व तथा जैविक खेती को बढ़ावा देने हेतु व्यावहारिक प्रशिक्षण में समन्वित कीट प्रबंधन की जानकारी प्रदान की।

दूसरे दिन पशुपालन विभाग से डॉ. जय श्री चरमोड़े द्वारा दुधारू पशुओ की देखभाल व स्वस्थ सम्बंधित टिप्स तथा एक्सरसाइज द्वारा महिला एवं पुरूष संभागियो को स्वास्थ्य योग एवं मैडिटेशन की विस्तार पूर्वक जानकारी प्रदान की तथा दैनिक दिनचर्या में निजी स्वास्थय व योग की जानकारी दी।

कृपाविस के कपिल कुमार द्वारा सत्त कृषि, टिकाऊ खेती की विशेषता, मुख्य घटक तथा टिकाऊ खेती के तहत मृदा उत्पादकता में वृद्धि हेतु जानकारी दी गई। उन्होनें किसानो को अपने खेतों और ओरणों में पौधारोपण की विस्तारपुर्वक जानकारी भी दी ताकि पर्यावरण संरक्षण को बढ़ावा मिल सके।

डॉ. सीताराम द्वारा भेड व बकरी की उन्नत नस्ले पशुओ की संक्रामक बीमारियो का उपचार एवं टीकाकरण व गहन संक्रामक रोग उपचार एवं टीकाकरण पर विस्तृत चर्चा की।

कृपाविस निदेशक श्रीमति प्रतिभा सिसोदिया द्वारा महिला मंडल व सामूहिक संसाधनो का प्रबन्धन में महिलाओ की भूमिका की जानकारी दी। वन विभाग सरिस्का से डॉ. डी.डी. मीणा द्वारा वन्य जीवो के रहन सहन व्यवहार पर चर्चा व वन्य जीवो द्वारा पालतू पशुओ एवं मनुष्यो पर आक्रमण एवं बचाव की समस्या की जानकारी व समाधान पर चर्चा की। समापन पर निदेशक श्रीमती प्रतिभा सिसोदिया व संस्थापक अमनसिंह द्वारा महिला पुरूष कृषकों को तीन दिवसीय आवासीय प्रशिक्षण में शान्तिपूर्वक रहने और रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रम और ओरण सम्बंधी लोकगीतों की प्रस्तुति पर धन्यवाद दिया और कार्य योजना की सूचि को पूरी करने का आश्वासन दिया इसके साथ ओरण देवबानी जैसे सामूहिक समाधान में भागीदारी के लिए महिलाओं को प्ररित किया।

अन्तिम सत्र मे वन–पशुधन–कृषि पर महिला मण्डलों द्वारा आगामी कार्ययोजना तैयार की गई। ओरणों–देवबणीयों और प्राकृतिक सामूहिक संसाधन के प्रबन्धन हेतू विस्तृत एवं व्यवहारिक ढांचा तैयार किया। जिसमें सर्वसम्मति से ओरणो के संरक्षण हेतु आगामी 25 मई को ओरण दिवस मनाने का प्रस्ताव पारित किया।

– कपिल कुमार
कृषि एवं पारिस्थितिकी विकास संस्थान (कृपाविस)

कृपाविस द्वारा चार दिवसीय ओरण प्रशिक्षण कार्यशाला का रामदेवरा में आयोजन

कृषि एवं पारिस्थितिकी विकास संस्थान (कृपाविस) द्वारा 24 दिसम्बर से 27 दिसम्बर 2023 को चार दिवसीय मरूधर कुंज रामदेवरा जैसलमेर में ओरण समुदायों की कार्यशाला का आयोजन किया गया। जिसमें जैसलमेर में ओरणों की वर्तमान व भविष्य की चिन्ताओ पर सहभागीयो के साथ चर्चा की गई। इस कार्यशाला में सांवला, राठौडा, मोडरडी, साकडा, छायण, दिधू , सोडाकोर, हमीरा आदि गावों के 40 पुरूषों व महिलाओं ने भाग लिया। कृपाविस संस्थापक श्री अमन सिंह द्वारा ओरणो के संरक्षण, पुर्ननिर्माण, जल संरक्षण के बारे में बताया गया। इसके साथ ही ओरण से प्राप्त होने वाले लाभ आजीविका सुरक्षा, परम्परागत जल संसाधन, चराई प्रबन्धन, खाद्य आहार एवं औषधीय पौधो के बारे में जानकारी दी।

कार्यशाला में आये विभिन्न समुदायों एव गावों से सहभागियो में श्री आईवीर सिंह पातावत ने आईमाता ओरण में हुए जैविक बदलाव, जड़ी–बुटियाँ और वन्य प्राणियो के बारे मे बताया। कार्यशाला के सहभागी हमीरा ओरण के श्री बलवीर सिंह और मोडरडी के श्री शेरसिंह ने ओरण को सुरक्षित और भविष्य संर्वधन के लिए एक जुट होकर कार्य करने का आवहान किया। सोडाकोर गाँव से श्रीमती रेखा कवँर ने आईमाता ओरण में कृपाविस द्वारा किये गये कार्य की प्रसंशा की और धन्यवाद व्यक्त किया। कृपाविस की निदेशक श्रीमति प्रतिभा सिसोदिया ने कृपाविस संस्थान द्वारा आजिविका हेतु चलाये जा रहे व्यसायिक प्रशिक्षण के बारे मे विस्तृत जानकारी दी। जिससे महिलाएँ आत्म विश्वास के साथ अपने परिवार का लालन–पालन कर सकती है। श्री डी. के. भादद्वाज ने ओरण संरक्षित एवं ओरण भविष्य को सुरक्षित हेतु ओरण समिति महिला मण्डल, पंचायत आदि के बारे में जानकारी दी। भारद्वाज जी ने ओरणों मे जल प्रबन्धन संरक्षण मे हो रहे नुकसान के बारे में बताया तथा ओरण मे नाडी, तालाब, आगोर, आदि की सुरक्षा और पुनःरोत्थान का आवाहान किया। कृपाविस द्वारा संचालित कार्यशाला मे सहायक कृषि अधिकारी ने सरकार द्वारा संचालित किसान योजनाओं के बारे मे विस्तृत जानकारी दी। उन्होनें अनार, निंबू व खजूर आदि के बागवानी हेतु सरकारी योजनाओ के बारे में बताया। कृपाविस से श्री राजेन्द्र मेवाडा ने ओरणों के भौगालिक मानचित्रण के बारे में चर्चा की।

कार्यशाला के दौरान लगभग 22000 बीघा क्षेत्रफल में फैली बाबा रामदेव जी ओरण का भ्रमण करवाया गया, यह ओरण राजस्व रिकॉर्ड में दर्ज है, जोकि रामदेवरा, वीरमदेवरा, एका, शरणायत, मावा, सूजासर आदि गांवो की सरहद तक फैली हुई है। इस ओरण में लगभग 100 किस्म के पेड़, पौधे, बेलें, घास आदि वनसंपदा के साथ ही गोडावण सहित कई वन्य प्राणी विचरण करते हैं।, यहां पर प्रवासी पक्षी कुरंजा का भी पड़ाव रहता है। ओरण सरंक्षण प्रतिभागियों द्वारा ओरण में स्थित ऐतिहासिक तीर्थस्थलों जिसमें रणुजा कुआं, पंचपीपली, वीरमदेव जी मंदिर, परचा बावड़ी, सहित ओरण में स्थित विभिन्न तालाबों का भ्रमण किया गया। जिले की अलग अलग ओरणों के आए 40 पर्यावरण प्रेमियों ने अपने अनुभव साझा किए और सभी ने अपने–अपने क्षेत्र की ओरणों के संरक्षण से संबधित अपने विचार व्यक्त किए, तथा सभी ने जिले में ओरण विकास व ओरण संरक्षण की जागरूकता लाने के लिए संस्था द्वारा किए जा रहे प्रयासों की सराहना की ।

कृषि एवं पारिस्थितिकी विकास संस्थान (कृपाविस), ओरण प्रशिक्षण केन्द्र, पुराना भूरासिद्ध, अलवर (राज०) द्वारा जनहित में प्रसारित।
मुद्रक: जय बाबा प्रिन्टर्स, स्टेशन रोड़, अलवर ।